फ्लोरेंस नाईटइंगेल

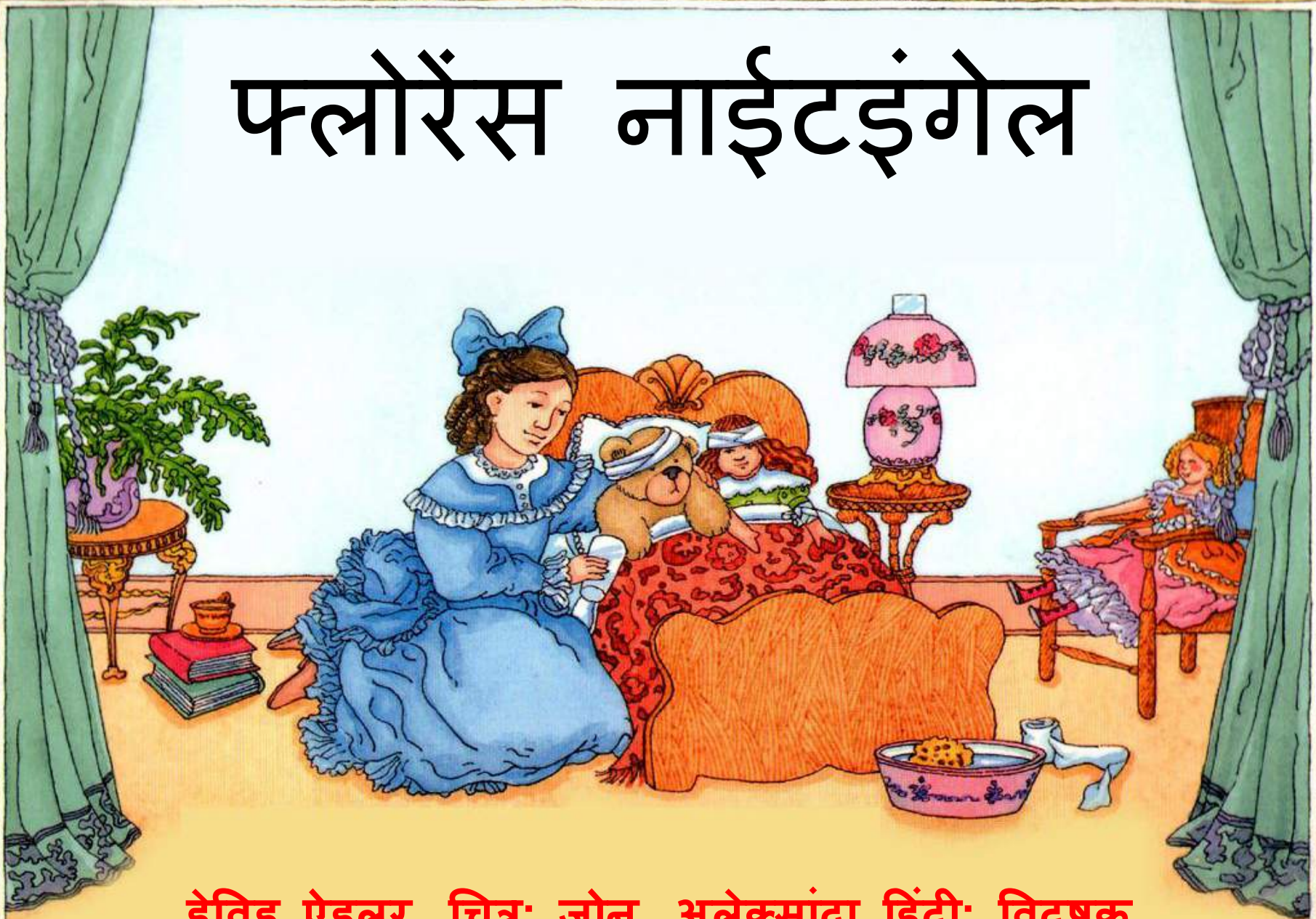

डेविड ऐडलर, चित्र: ज़ोन, अलेक्सांद्रा हिंदी: विदूषक

फ्लोरेंस नाईटइंगेल का जन्म 12 मई, 1820 को फ्लोरेंस, इटली में हुआ. उनका नाम, जिस शहर में वो पैदा हुईं उसी के नाम पर रखा गया. फ्लोरेंस की बहन – पार्थीनोप, उनसे एक साल पहले नेपिल्स, इटली में पैदा हुईं. उनका नाम भी, उनके जन्म शहर पर ही रखा गया. पार्थीनोप – नेपिल्स का ग्रीक नाम है.

फ्लोरेंस के माता-पिता – फैनी और विलियम नाईटइंगेल, मूलतः इंग्लैंड के थे. इत्तिफाक से उनकी दोनों बेटियों का जन्म तब हुआ जब वो इटली की यात्रा कर रहे थे.

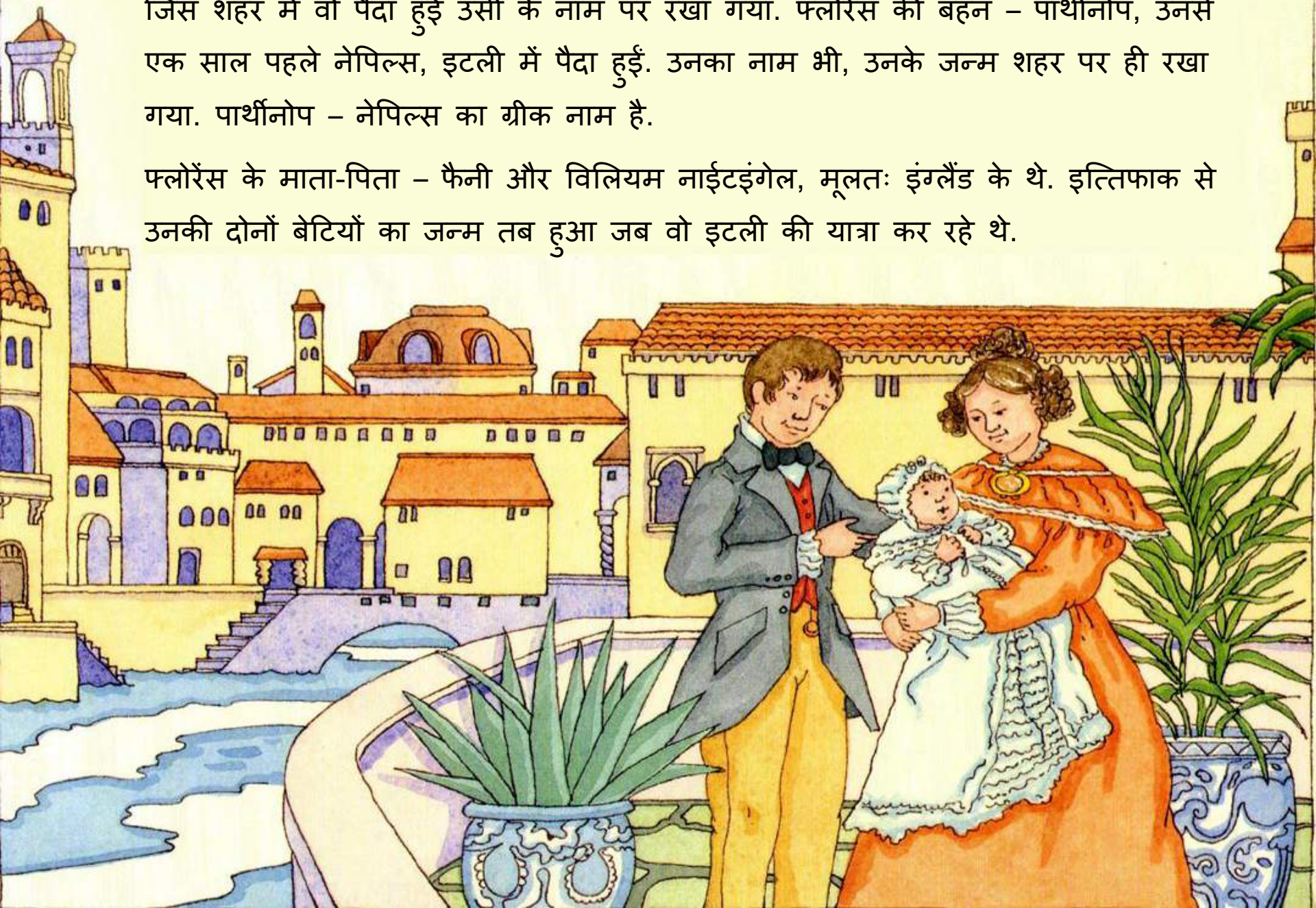

नाईटइंगेल परिवार काफी धनी था. उनके यहाँ बहुत नौकर-चाकर थे. वे लन्दन के पास एक आलीशान मकान में रहते थे जिसका नाम “एम्बले पार्क” था. गर्मियों में वे एक अन्य घर में रहने चले जाते थे जिसका नाम था “लीआ हर्स्ट”. फ्लोरेंस और उसकी बहन पार्थीनोप को, घर में प्राइवेट टीचर्स और उनके पिता पढ़ाते थे.

फ्लोरेंस बचपन में बहुत सुन्दर थी और उसकी कल्पना शक्ति बहुत तेज़ थी. वो दिन भर सपने देखती थी - जिसमें वो खुद को, राक्षस या फिर एक साहसी हेरोइन मानती थी. वो पढ़ाई में बहुत होशियार थी – विशेषकर गणित में. उसे लिखने का भी शौक था. वो नियमित रूप से डायरी और बहुत से लोगों को पत्र लिखती थी. वो हमेशा पुराने कागज़ के टुकड़ों पर कुछ-न-कुछ लिखती रहती थी.

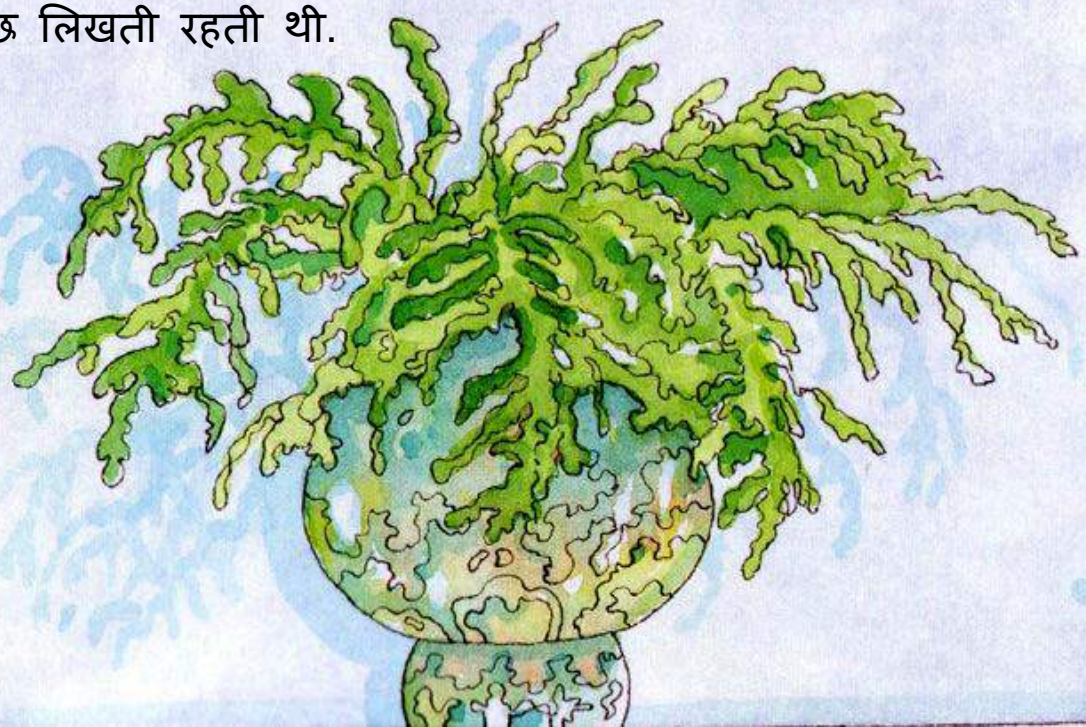

12 जुलाई, 1830 को, फ्लोरेंस ने सूर्यास्त देखने के बाद यह लिखा, “पहली बार मुझे लगा कि मुझे भगवान से प्रेम है.” सात साल बाद 7 फरवरी 1837 को उसने लिखा, “भगवान ने मुझे अपनी सेवा के लिए बुलाया है,” पर वो “सेवा” क्या होगी यह उसे भी नहीं पता था.

सितम्बर 1837 में नाईटइंगेल परिवार फ्रांस, इटली और स्विट्ज़रलैंड की यात्रा करने गया. वहां उन्होंने संगीत कार्यक्रम, नाटक और उच्च दर्जे की पार्टियों में भाग लिया. उस समय फ्लोरेंस सत्रह बरस की थी और बहुत लोकप्रिय थी. 1839 में, दो साल बाद फ्लोरेंस और उसकी बहन को क्वीन विक्टोरिया – इंग्लैंड की महारानी से मिलने का मौका मिला.

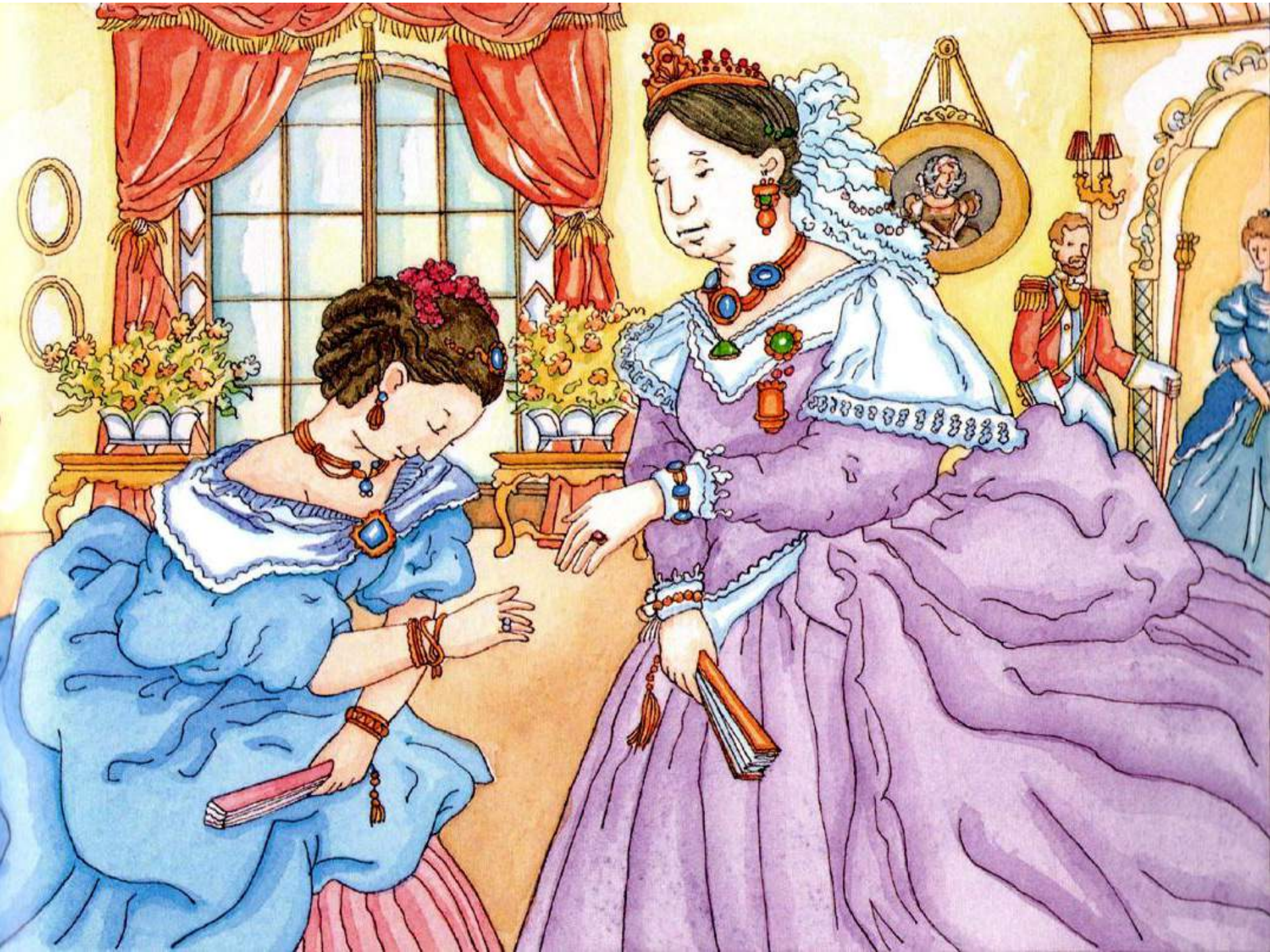

बहुत से युवा, फ्लोरेंस को चाहते थे. फ्लोरेंस ने बाद में लिखा कि एक आदमी – "रिचर्ड मिल्नस को मैं बहुत चाहती थी." उसने कई बार फ्लोरेंस के सामने शादी का प्रस्ताव भी रखा, पर फ्लोरेंस ने उसे हमेशा "न" में ही जवाब दिया.

"मुझे पता था कि मैं उसकी ज़िन्दगी को झेल नहीं पाऊंगी," फ्लोरेंस ने कहा. मिल्नस, एक बहुत अमीर आदमी था. अगर फ्लोरेंस उससे शादी करती तो उसे भी अपनी माँ जैसी ही जिंदगी गुजारनी पड़ती. फ्लोरेंस अपना जीवन "घर संवारने और सामाजिक गपशप लगाने में व्यर्थ नहीं करना चाहती थी."

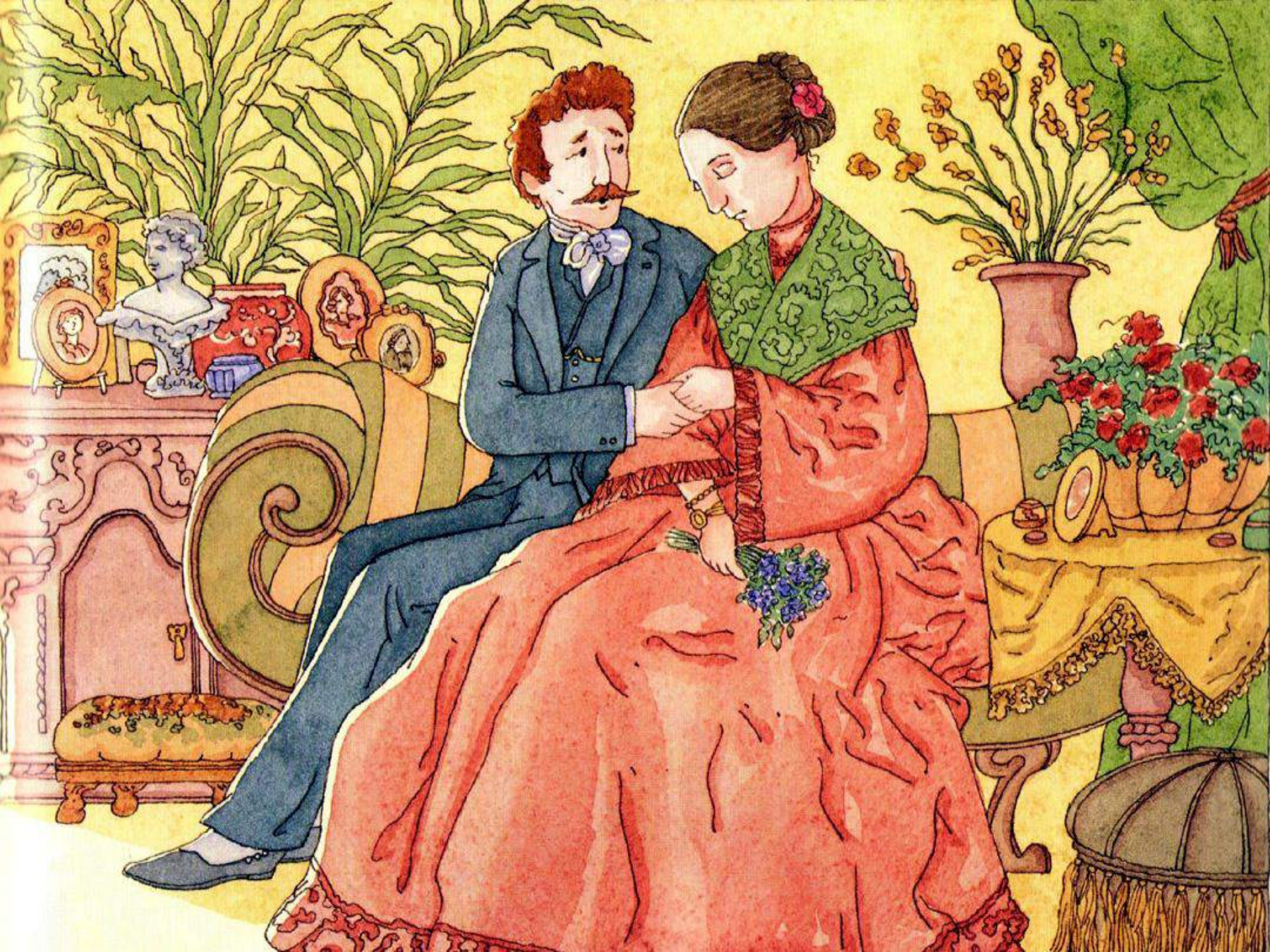

1840 का दशक इंग्लैंड के लिए बड़ा मुश्किल था. वहां पर लोग भूखे थे. अस्पताल और जेलों में लोग ठूस-ठूसकर भरे थे. फ्लोरेंस, गरीबों के घरों में, उनसे मिलने जाती. वो उनके लिए खाना, कपड़े और दवाएं लेकर जाती. वो बीमारों की मदद करती.

1844 में, चौबिस साल की उम्र में, फ्लोरेंस ने निश्चय किया – कि वो एक नर्स बनेगी और किसी अस्पताल में काम करेगी. “मेरे लिए वो भगवान का काम होगा,” उसने लिखा. 1845 में, फ्लोरेंस ने यह बात अपने माता-पिता को बताई.

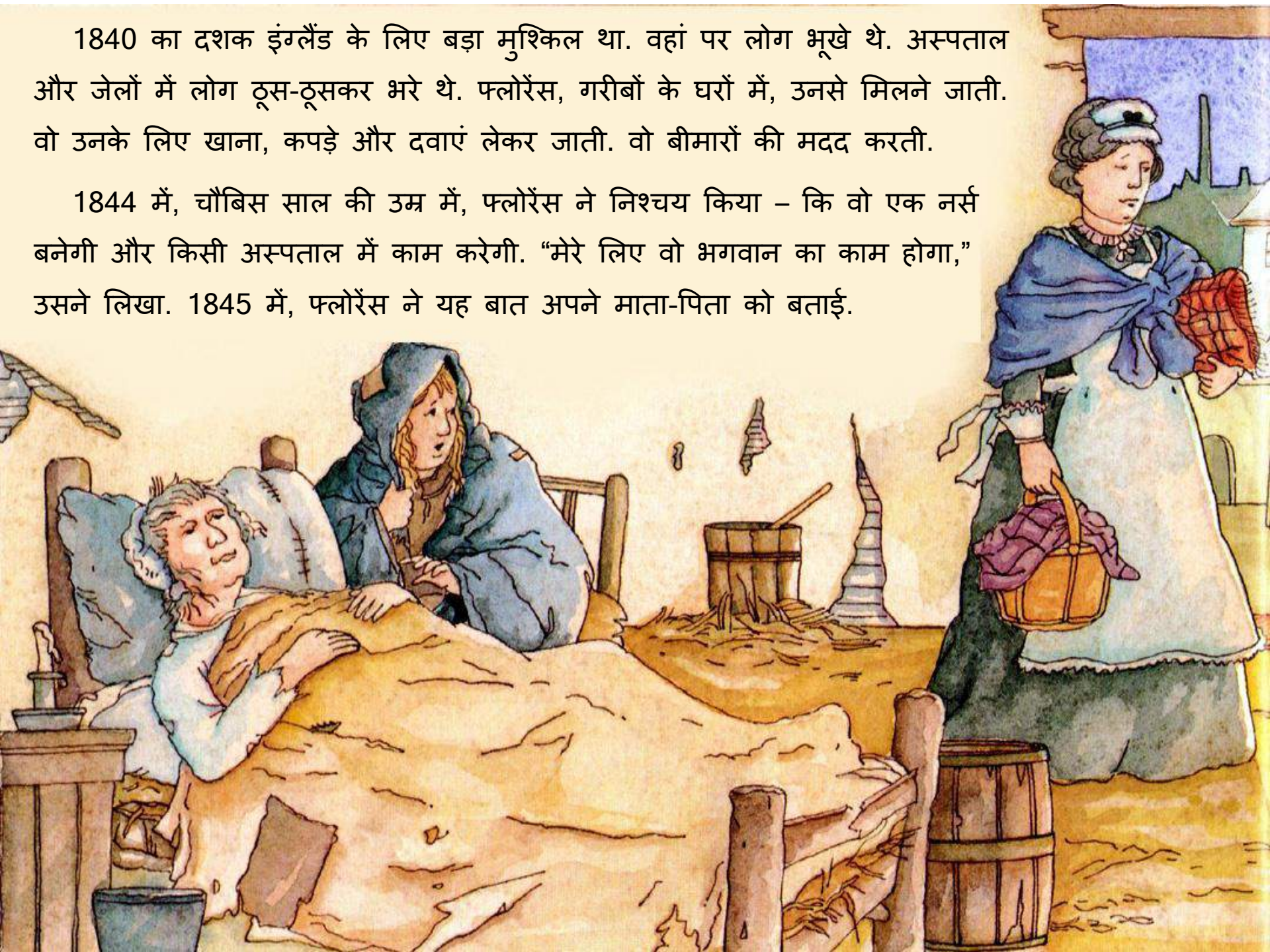

उस ज़माने में अस्पताल बहुत गंदे और बदबूदार होते थे. मरीज़ दर्द के छुटकारा पाने के लिए खूब व्हिस्की पीते थे. बहुत सी नर्सें भी शराब पीती थीं. तब बीमारियों के बारे में जानकारी भी बहुत कम थी. नौकर-चाकर मरीजों को नहलाते थे और उनके लिए खाना पकाते थे. नाईटइंगेल परिवार फ्लोरेंस का निर्णय सुनकर एकदम डरा और सहमा. वो अपनी प्यारी बेटी को, कभी भी नर्स नहीं बनने देना चाहते थे.

परिवार का निर्णय सुनकर फ्लोरेंस बहुत दुखी हुई. वो बहुत उदास हुई और कई दिनों तक सोई नहीं. उसका वज़न भी कम होने लगा. दिसंबर 5 1845 को उसने एक पत्र में लिखा, “मैं बस धूल हूँ और कुछ नहीं, मेरी कोई औकात नहीं ... लगता है मेरी आत्मा, आंसुओं में घुलकर बह जायेगी.” पर फ्लोरेंस ने अपने सपने को नहीं छोड़ा.

फिर जून 1951 के अंत में, फ्लोरेंस के माता-पिता ने उसे जर्मनी में नर्सिंग पढ़ने की अनुमति दी. उस समय फ्लोरेंस 31 वर्ष की थी. पर कम-से-कम अब वो अपने जीवन का असली काम तो शुरू कर सकती थी.

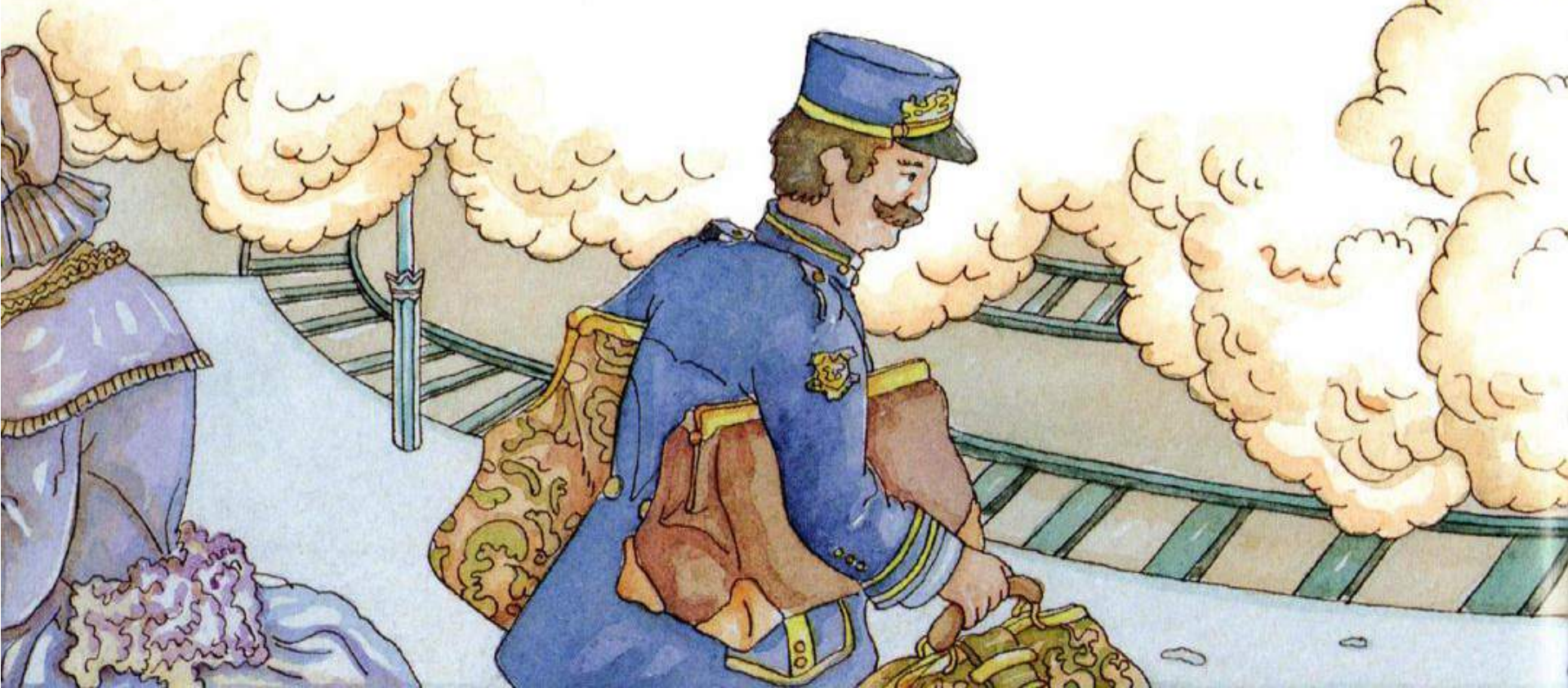

Rail Road

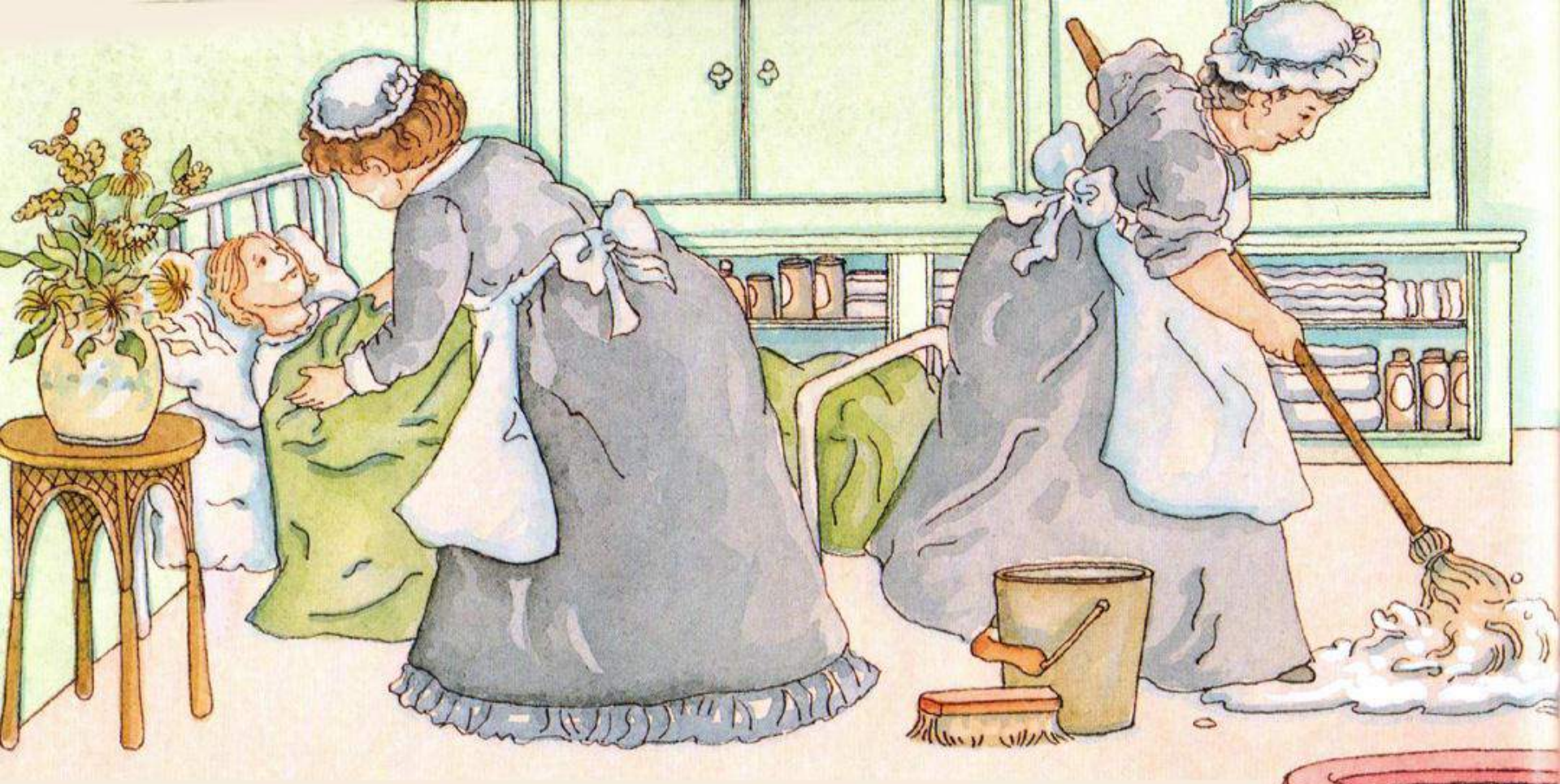

1853 के शुरू में, फ्लोरेंस पेरिस गई. वहां उसने कई अस्पतालों का दौरा किया और डॉक्टर्स को करीबी से काम करते हुए देखा. साल के अंत में फ्लोरेंस को, लन्दन में महिलायों के एक छोटे अस्पताल में सुप्रिनटेनडेंट नियुक्त किया गया. इस अस्पताल में बीमार औरतों का इलाज होता था. फ्लोरेंस ने सुनिश्चित किया कि अस्पताल बिलकुल साफ़-सुथरा रहे. वो अस्पताल, केवल चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के सदस्यों के लिए था.
पर फ्लोरेंस ने सभी ज़रूरतमंद मरीजों को वहां दाखिल किया.

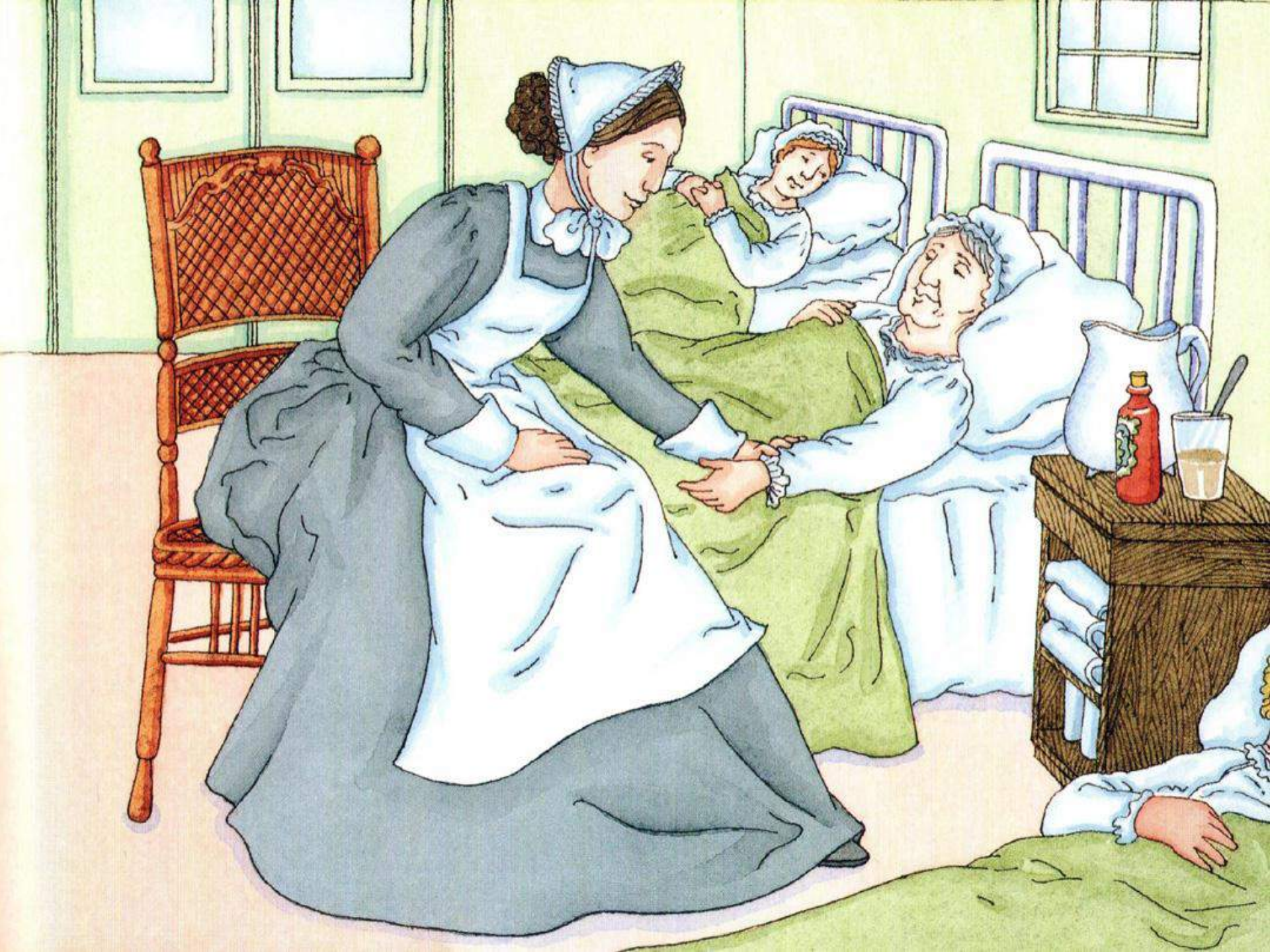

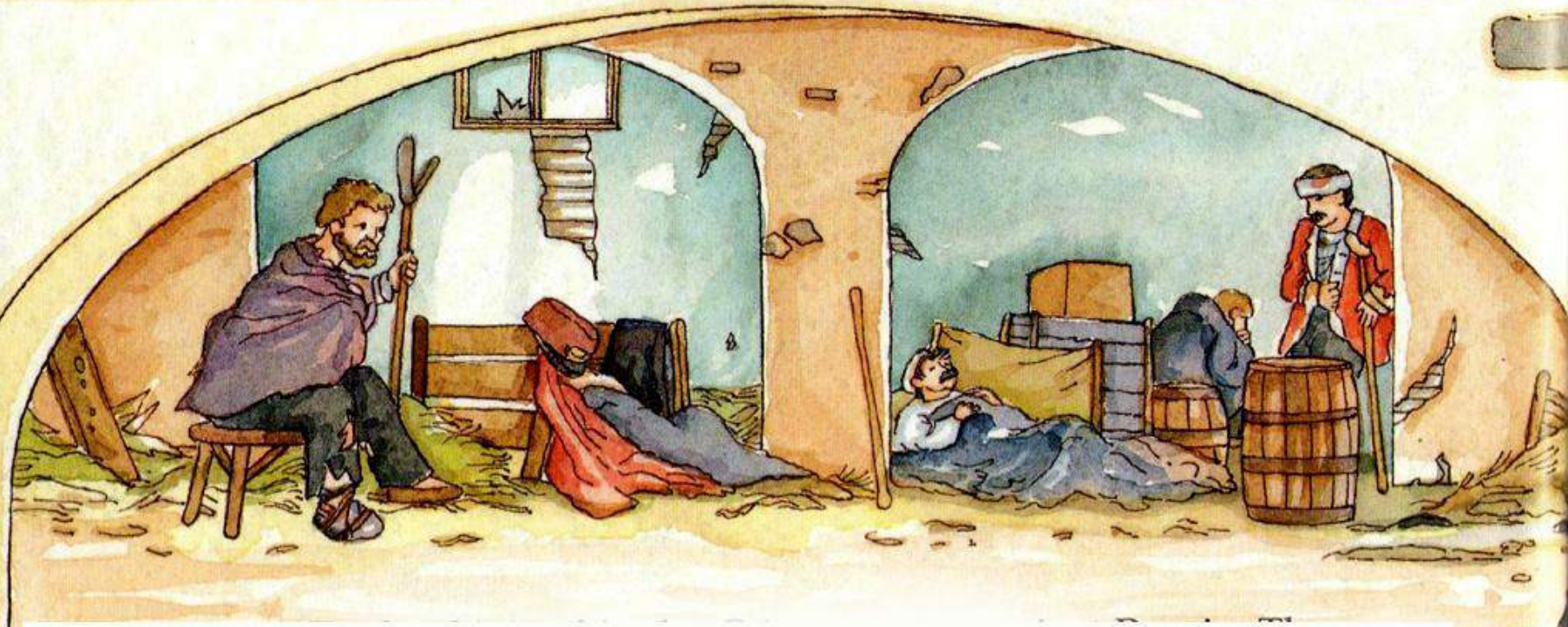

1854 में इंग्लैंड, क्रीमियन-युद्ध में शामिल हुआ और उसकी रूस के साथ लड़ाई शुरू हुई. इंग्लैंड में युद्ध में घायल फौजियों के लिए न तो पर्याप्त संख्या में डॉक्टर्स थे और न ही अस्पताल. वहां पर मोमबत्तियों, पट्टियों और नर्सों की भी कमी थी. 15 अक्टूबर 1854 को, इंग्लैंड के युद्ध सचिव ने, फ्लोरेंस नाईटइंगेल से कुछ कुशल नर्सें चुनकर उन्हें क्रिमिया ले जाने को कहा. एक हफ्ते में फ्लोरेंस, क्रिमिया के लिए रवाना हुई.

जब फ्लोरेंस स्कूटारी, टर्की पहुंची तो वहां के हालात देखकर उसे बड़ा धक्का लगा. वहां के अस्पताल में खुलेआम चूहे घूम रहे थे और हर जगह पिस्सू और मक्खियाँ भिनभिना रही थीं. घायल सैनिक गंदे पलंगों पर, या फिर ज़मीन पर पड़े थे. फ्लोरेंस और नर्सों ने मिलकर अस्पताल को पूरी तरह साफ़ किया, पौष्टिक खाना बनाया और मरीजों की अच्छी देखभाल की.

हर रात फ्लोरेंस, लालटेन लेकर एक पलंग से दूसरे पलंग पर जाती और यह सुनिश्चित करती कि सभी सैनिक आराम से सोएं.

सैनिक, फ्लोरेंस को **लेडी विथ द लैंप** (दीपक लिए महिला) कहकर संबोधित करते. वो फ्लोरेंस के आने का इंतज़ार करते. जब फ्लोरेंस वार्ड में लालटेन लेकर गुज़रती तो उसकी काली परछाई पलंगों पर पड़ती. तब कुछ सैनिक हाथ बढ़ाकर उसकी परछाई को चूमने की कोशिश करते.

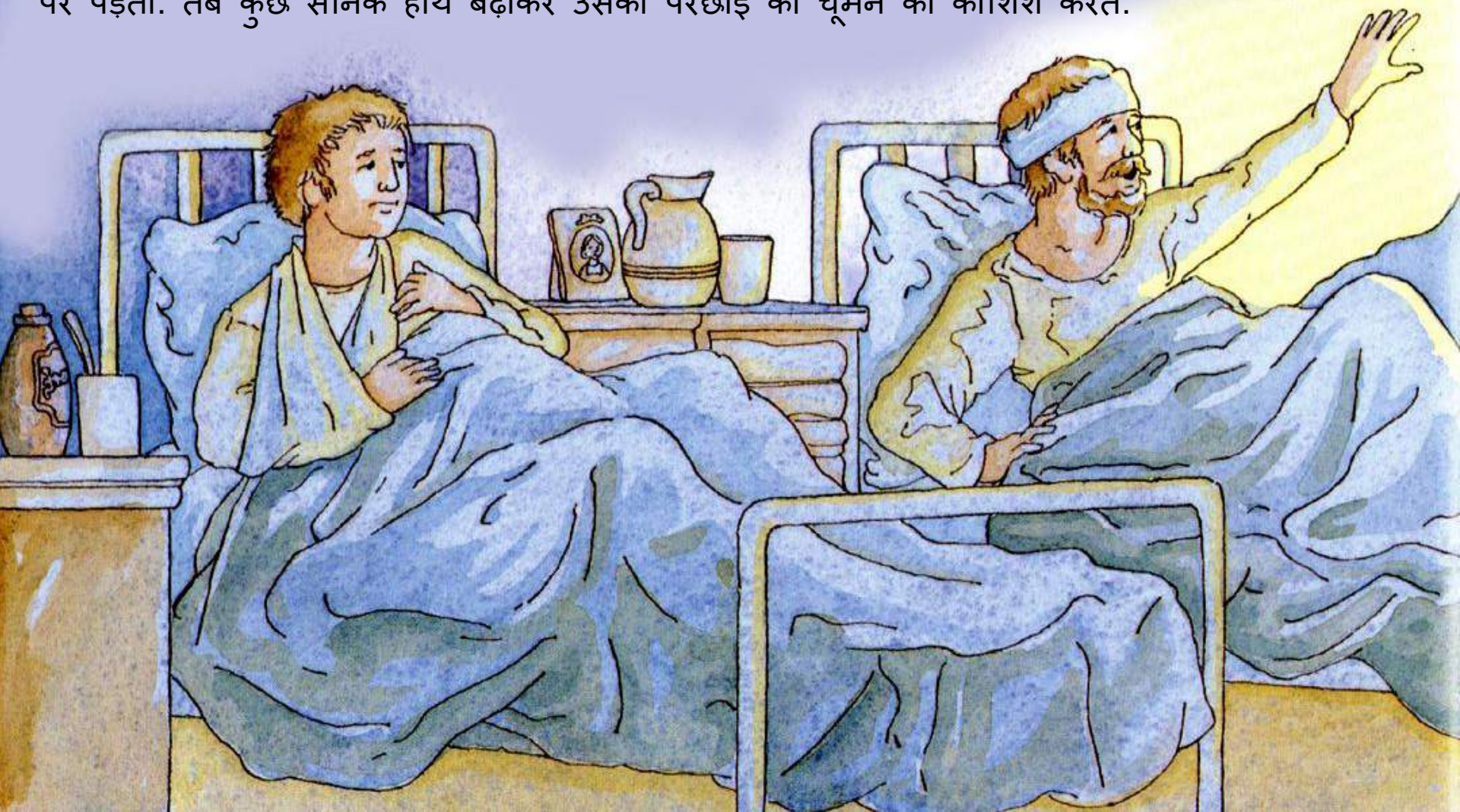

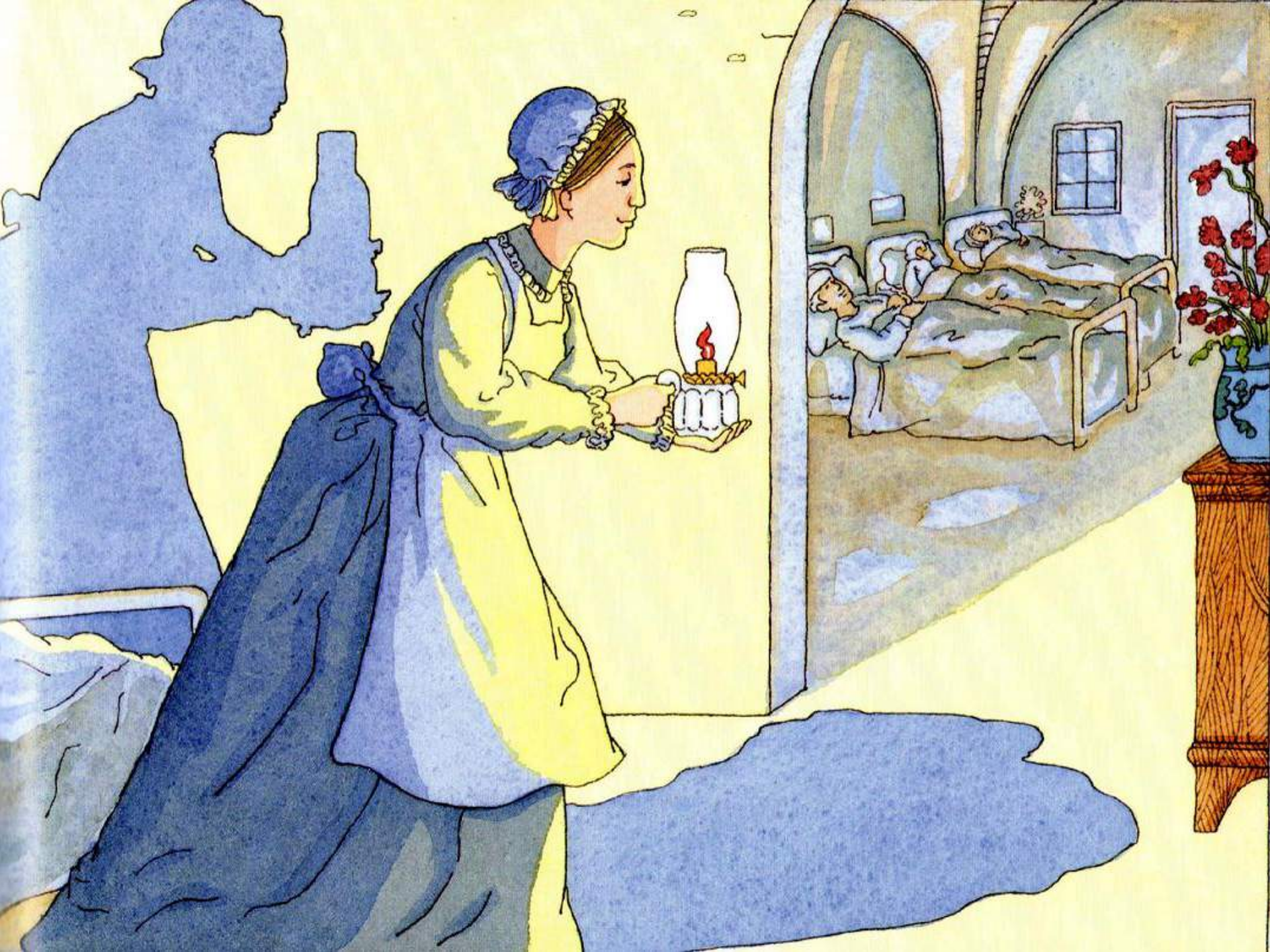

कुछ रातें ऐसी भी होतीं जब फ्लोरेंस, बिना सोए पूरी रात काम करती रहती. मई 1855 में, फ्लोरेंस खुद सख्त बीमार पड़ी. दो हफ़्तों तक वो ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलती रही. बाद में उसकी तबियत धीरे-धीरे सुधरी और कुछ महीनों बाद वो फिर काम पर वापिस आयी.

पार्थीनोप ने फ्लोरेंस को चिट्ठी में लिखा, "तुम्हें लोग बहुत प्यार करते हैं." फ्लोरंस के ऊपर लोगों ने गीत और कवितायेँ रचीं. लोगों ने उसके सम्मान में, बच्चियों का नाम फ्लोरेंस रखा. "नाईटइंगेल-फंड" की स्थापना हुई और उसमें लोगों ने दिल खोलकर चंदा दिया. अधिकांश चंदा, सैनिकों ने दिया. फ्लोरेंस ने बाद में उस फंड से, नर्सों का एक स्कूल शुरू किया.

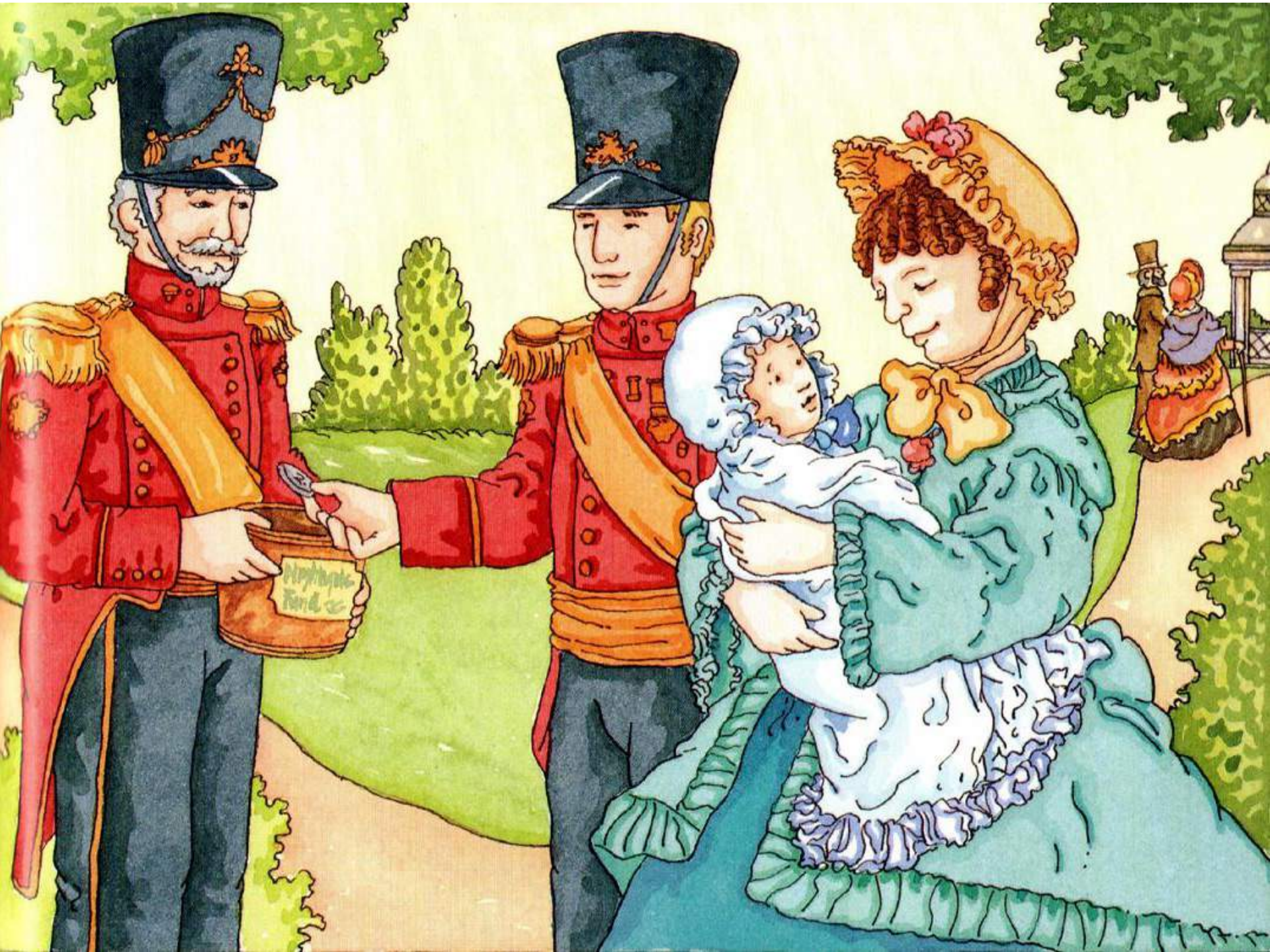

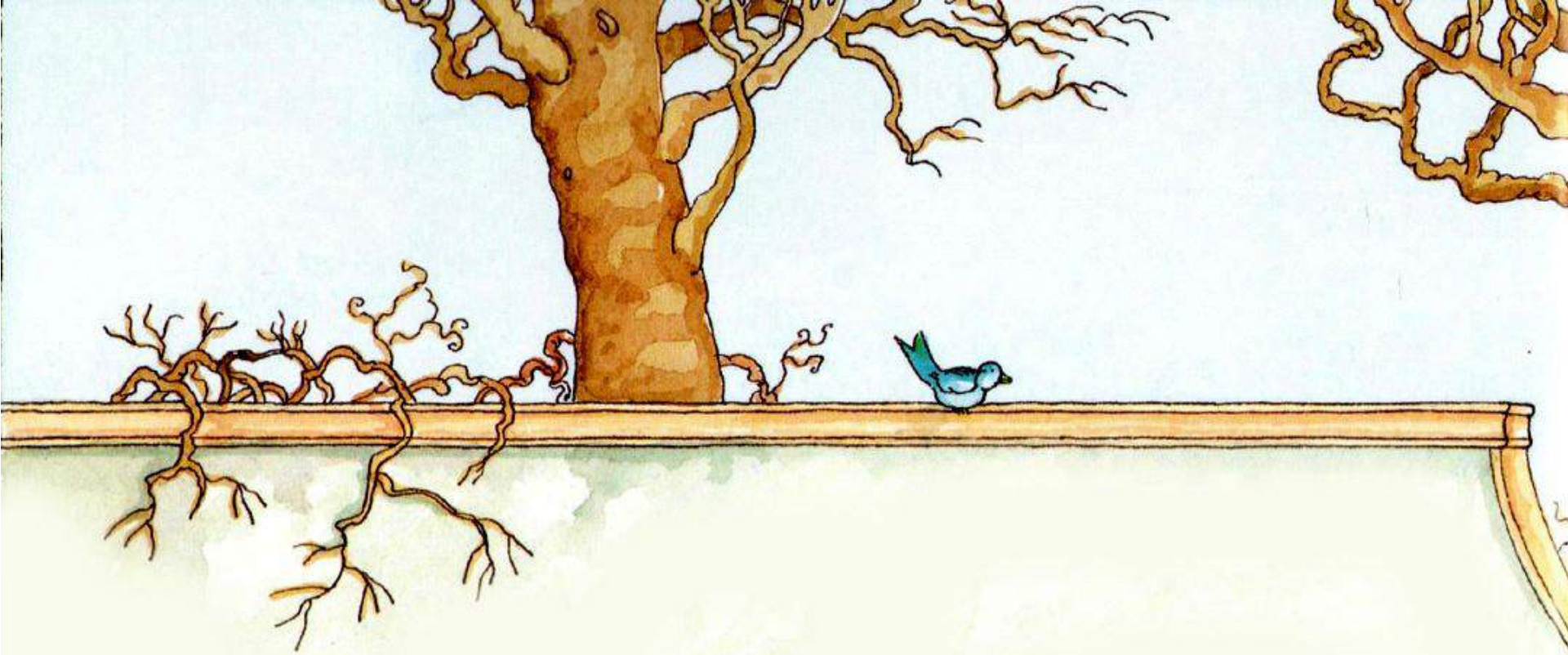

1856 में, क्रिमियन युद्ध समाप्त हुआ. उसके बाद फ्लोरेंस नाईटइंगेल के सम्मान में अनेक समारोह आयोजित किये गए. पर क्योंकि युद्ध में बहुत लोगों की मौत हुई थी इसलिए फ्लोरेंस का जश्न मनाने का बिल्कुल मन नहीं था. वो चुपचाप घर वापिस आई और उसने उन समारोहों में भाग लेने से इंकार किया.

फ्लोरेंस की उम्र तब छत्तीस साल की थी. वो अभी भी एक युवा महिला थीं. पर बीमारी से वो कुछ कमज़ोर हो गयी थीं. तब से 50 साल बाद - अपनी मृत्यु तक, फ्लोरेंस ज़्यादातर घर पर ही रहीं और वहीं से उन्होंने काम किया. घर में वो कागजों, नोटबुक्स, और कई पालतू बिल्लियों से घिरी रहती थीं.

महारानी विक्टोरिया, फ्लोरेंस की बड़ी प्रशंसक थीं. फ्लोरेंस द्वारा ब्रिटिश सैनिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ दिए जाने का महारानी पूरा समर्थन करती थीं. उसके लिए उन्होंने एक रॉयल कमीशन भी नियुक्त किया. फ्लोरेंस ने इस कमीशन को 1000 पन्नों की एक रिपोर्ट पेश की. फ्लोरेंस के काम की वजह से ब्रिटिश सैनिकों का जीवन बेहतर हुआ और उनको मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं में भी सुधार आया.

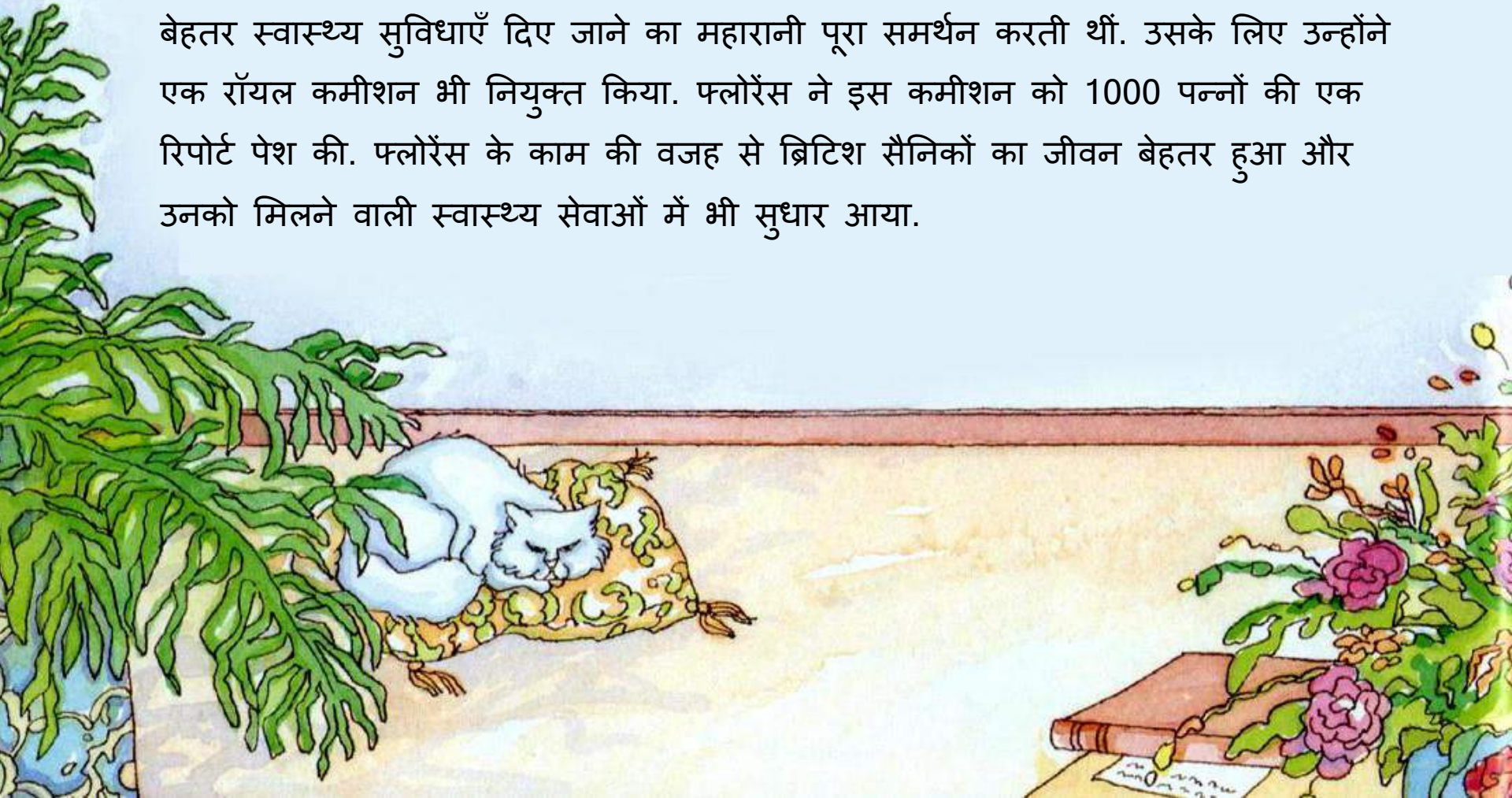

1859 में फ्लोरेंस नाईटइंगेल द्वारा लिखी दो किताबें छपीं. पहली थी ***नोट्स ऑन नर्सिंग*** और दूसरी थी ***नोट्स ऑन हॉस्पिटल्स***. दो साल बाद 1861 में, फ्लोरेंस ने अमरीका के युद्ध सचिव को "सैनिक अस्पताल" कैसे खोले जाएँ इस बारे में सलाह दी. उस समय अमरीका में बहुत से सैनिक, अमरीकी-गृहयुद्ध में ज़ख़्मी हुए थे.

1860 में लन्दन में, नाईटइंगेल स्कूल ऑफ़ नर्सिंग स्थापित हुआ. जिन नर्सों को फ्लोरेंस ने प्रशिक्षित किया था उन्हें **"नाईटइंगेल"** बुलाया जाता था. वो नर्सें अपना काम शुरू करने से पहले फ्लोरेंस नाईटइंगेल का आशीर्वाद लेने आतीं. अगर किसी **"नाईटइंगेल"** को दूर-दराज़ काम के लिए भेजा जाता तो फ्लोरेंस, नर्स के पहुँचने से पहले ही उसके स्वागत के लिए वहां पर फूलों का गुलदस्ता भेजतीं.

उसके बाद “नाईटइंगेल स्कूल” की तर्ज़ पर यूरोप और अमरीका में भी नर्सिंग स्कूल खुलने लगे.

1907 में, सत्तासी साल की आयु में फ्लोरेंस नाईटइंगेल को इंग्लैंड के किंग एडवर्ड ने ***आर्डर ऑफ़ मेरिट*** पुरुस्कार से सम्मानित किया. इस पुरुस्कार के जीतने वाली वो पहली महिला थीं.

13 अगस्त 1910, नब्बे साल की उम्र में फ्लोरेंस नाईटइंगेल की नींद में ही मृत्यु हो गई. परन्तु उनका काम आज भी जीवित है. उन्होंने अपने योगदान से अस्पतालों को साफ़ और बेहतर बनाया. उन्होंने नर्सिंग को एक महत्वपूर्ण और इज्ज़तदार पेशा बनाने में मदद दी. फ्लोरेंस नाईटइंगेल ने अपने आसपास की दुनिया को बेहतर और मानवीय बनाया.

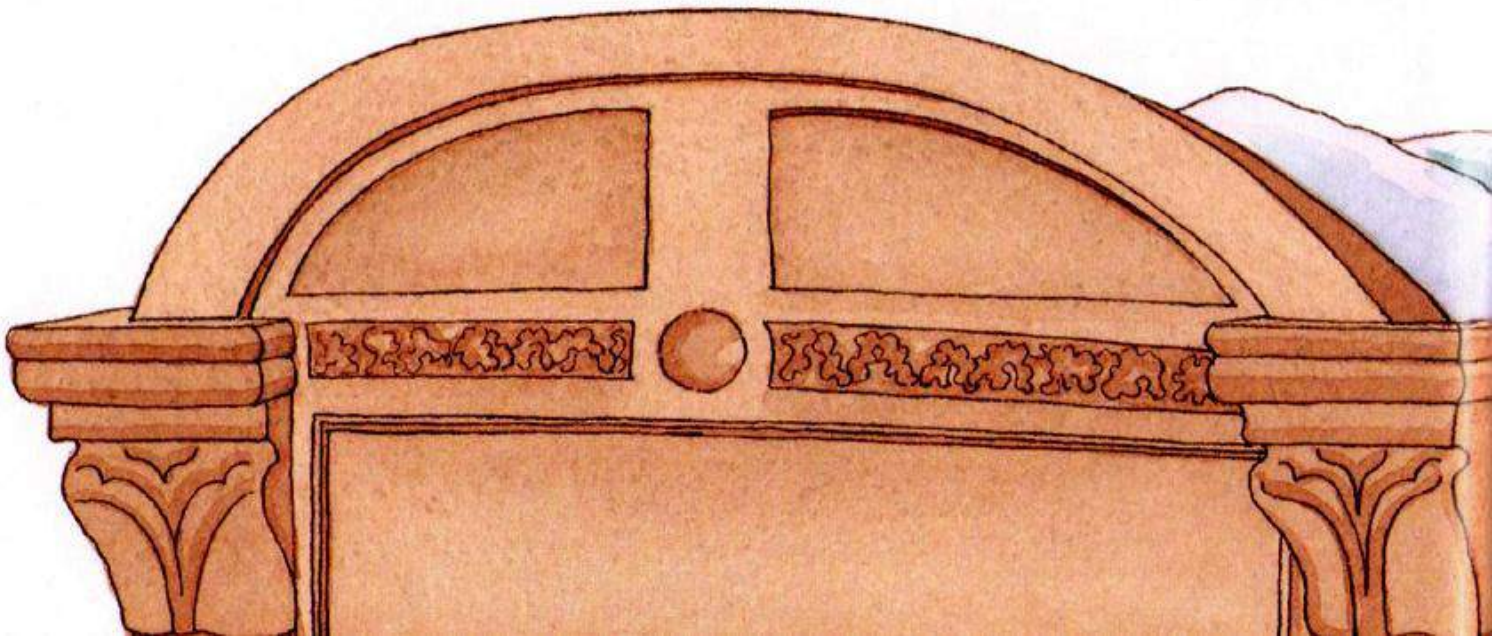

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1820	12 मई, फ्लोरेंस, इटली में जन्म
1837	7 फरवरी को उन्होंने एक निजी नोट में लिखा, ““भगवान ने मुझे अपनी सेवा के लिए बुलाया है”
1839	इंग्लैंड की महारानी - क्वीन विक्टोरिया से भेंट
1854	इंग्लैंड ने क्रीमियन युद्ध में भाग लिया. फ्लोरेंस नाईटइंगेल, कुछ नर्सों को टर्की लेकर गईं और वहां उन्होंने घायल ब्रिटिश सैनिकों की देखभाल की
1854	क्रीमियन युद्ध का अंत हुआ. जुलाई में जब आखरी ब्रिटिश सैनिकों ने टर्की छोड़ा, तब फ्लोरेंस इंग्लैंड `वापिस आईं
1859	उनकी दो किताबें - *नोट्स ऑन नर्सिंग* और *नोट्स ऑन हॉस्पिटल्स* छपीं
1860	इंग्लैंड में फ्लोरेंस नाईटइंगेल स्कूल ऑफ़ नर्सिंग की स्थापना
1907	किंग एडवर्ड द्वारा *आर्डर ऑफ़ मेरिट* पुरुस्कार से सम्मानित
1910	13 अगस्त को लन्दन में देहांत

फ्लोरेंस नाईटइंगेल पर चित्र पुस्तक